एक्सेस
ने सिखाई
अंग्रेज़ी

लॉरिंडा कीज़ लौंग

करीब दो साल पहले तक 15 वर्षीय हिना सैफी बमुश्किल अंग्रेज़ी में एक सही वाक्य बोल पाती थी। आज वह बिना फर्रे की मदद लिए फर्राटेदार अंग्रेज़ी में 150 लोगों को संबोधित कर रही थी, ''मैं आत्मविश्वास से भरी एक युवा लड़की हूं। मेरे सामने एक उज्जवल भविष्य है।'' फिर उसने राजदूत डेविड सी. मल्फ़र्ड को अपनी हाल की तीन सप्ताह की अमेरिका यात्रा के बारे में बताया और फिर एशियन न्यूज़ इंटरनेशनल के कैमरादल को अंग्रेज़ी में साक्षात्कार दिया।

हिना के पिता फलों का खोखा चलाते हैं। वह अपने परिवार में स्कूली पढ़ाई करने वाली पहली पीढ़ी की प्रतिनिधि है। उसके जीवन और भविष्य की संभावनाओं को बदला है विदेश विभाग के इंग्लिश एक्सेस माइक्रोस्कॉलरशिप प्रोग्राम ने। यह अनूठा कार्यक्रम एक प्रभावी, इंटरएक्टिव, छात्र-केंद्रित तरीकों का उपयोग करते हुए संसारभर में सुविधावंचित वर्गों के 14-18 आयु वर्ग के किशारों को अंग्रेज़ी सिखाकर उन्हें अधिकारसम्पन्न बना रहा है। कार्यक्रम का लक्ष्य इन किशोरों को विश्वविद्यालयों में प्रवेश पाने और अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार में कॅरिअर शुरू करने के लिए आवश्यक भाषा कौशल प्रदान करना है।

यह कार्यक्रम अध्यापकों को प्रशिक्षित करने के साथ-साथ अमेरिकी शैली की पठन-पाठन सामग्री भी उपलब्ध करवाता है और विद्यालयों को छात्रों में सक्रिय ग्रहणशीलता बढ़ाने की विधियां विकसित करने के लिए सहायता देता है ताकि रटंत विद्या पर जोर खत्म हो। नई दिल्ली में अमेरिकी राजदूत के आवास रूज़वेल्ट हाउस के लॉन में दो साल के पाठ्यक्रम के अपने साथियों, अध्यापकों, साथियों के माता-पिताओं और अमेरिकी राजनयिकों को संबोधित करते हुए हिना ने कहा, ''मुझे यहां तक पहुचाने का श्रेय मेरे अध्यापकों को जाता है।'' वह जामिया सैकेंडरी स्कूल के अपने सहपाठियों के साथ सप्ताह में तीन बार दो-दो घंटे की एक्सेस कक्षाओं के लिए पास ही में जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय में जाती रही जहां वह कोलाज बनाकर चित्रों के बारे में बताते, गीत गाते और हिन्दी फिल्मों के लोकप्रिय गीतों का अंग्रेज़ी में अनुवाद करते। हिना बताती है कि इस कक्षा में उसे इतना मजा आता था कि मन करता था कि पढ़ाई खत्म न हो। ''हम शब्द-सामर्थ्य, व्याकरण और खासतौर पर उच्चारण पर बहुत मेहनत करते थे।'' हिना और उसका सहपाठी तकदीस अंजुम इतने कुशल सिद्ध हुए कि पिछली गर्मियों में उन्हें तीन सप्ताह के अमेरिका प्रवास के लिए चुना गया। हिना बताती है, ''मुझे अपने सपनों के देश में रहने का मौका मिला। और सब से अच्छी बात यह है कि मैं एक अमेरिकी परिवार में रही।'' हिना ने वाशिंगटन डी.सी., शिकागो और सैन फ्रांसिस्को देखे। चेन्नई और नई दिल्ली के कुछ अन्य एक्सेस छात्रों ने लिखित और मौखिक परीक्षाएं पास करके विदेश विभाग के *यस* युवा आदान-प्रदान कार्यक्रम के तहत अमेरिका में एक साल रह कर हाई स्कूल में पढ़ने का अवसर पाया।

वर्ष 2004 में शुरू हुआ एक्सेस प्रोग्राम अब तक नई दिल्ली, जम्मू, अहमदाबाद, कोलकाता, त्रिवेंद्रम और चेन्नई में 1,265 छात्रों के जीवन की दिशा संवार चुका है। आज 45 देशों में चल रहे एक्सेस केन्द्रों में 10,000 छात्र अंग्रेज़ी सीख रहे हैं जिनमें से 730 भारत में हैं।

हिना नई दिल्ली में चल रही कक्षा के उन 114 छात्र-छात्राओं में से एक है जिन्हें 17 नवंबर को रूज़वेल्ट हाउस में आयोजित कार्यक्रम में पाठ्यक्रम सफलतापूर्वक पूरा करने के प्रमाणपत्र मिले। बाद में इन छात्रों ने भाषा कौशल का नमूना पेश करते हुए राजदूत मल्फ़र्ड से भारत-अमेरिकी नागरिक परमाणु समझौते पर चर्चा की और उनकी पत्नी जीनी से अपनी पसंदीदा कविताओं पर। कोलकाता और चेन्नई के छात्रों ने भी दो साल का पाठ्यक्रम पूरा कर लिया है।

छात्रों को संबोधित करते हुए राजदूत मल्फ़र्ड ने कहा, ''आप लोग भारत में इस महत्वाकांक्षी, विश्वव्यापी पहल के पहले लाभार्थी हैं। अंग्रेजी पढ़ने, लिखने और बोलने में आपकी सफलता और समर्पण ने आपसे एक-दो साल छोटे सुविधावंचित वर्गों के आपके सहपाठियों को एक्सेस की कक्षाओं में शामिल होकर अपने जीवन और संभावनाओं को सुधारने के लिए प्रेरित किया है।''

भारत में अंग्रेजी बोलने-समझने वालों की संख्या अमेरिकी और ब्रिटेन के अंग्रेजीभाषियों की कुल संख्या से अधिक है लेकिन भारतीय समाज के बहुत से हिस्सों को आज भी अच्छी अंग्रेजी की पढ़ाई उपलब्ध नहीं है। एक्सेस किशोरों को आज के संसार में सफल होने के लिए अतिमहत्वपूर्ण कौशल सीखने का अवसर उपलब्ध करवाता है।

राजदूत मल्फ़र्ड ने छात्रों से कहा, ''कॉलेज का फॉर्म भरने के लिए आप सभी को अंग्रेज़ी की बेहतर समझदारी की जरूरत पड़ेगी। उसके बाद नौकरी के लिए आवेदन करने और साक्षात्कार में शामिल होने के लिए भी अंग्रेज़ी की जरूरत बनी रहेगी। मेरा आप से आग्रह है कि पढ़ाई बीच में न छोड़ें। अंग्रेज़ी को अपनी बोलचाल का हिस्सा बनाए रखें - यह बहुत उपयोगी साबित होगी।''

ऊपर बाएं: एक्सेस कार्यक्रम की ग्रेजुएट हिना सैफ़ी और शादाब नाज़मी राजदूत डेविड सी. मल्फ़र्ड से बातचीत कर रही हैं जबकि जीनी मल्फ़र्ड मुस्करा रही हैं। पीछे जामिया मिलिया इस्लामिया के रजिस्ट्रार एस. एम. अफ़ज़ल दिखाई दे रहे हैं।
ऊपर: हिना सैफ़ी अंग्रेज़ी में साक्षात्कार देते हुए।
नीचे: जामिया सैकेंडरी स्कूल से एक्सेस कार्यक्रम के तहत ग्रेजुएट विद्यार्थी अमेरिकी राजदूत और उनकी पत्नी के साथ नई दिल्ली में उनके आवास पर।

ज़्यादा जानकारी के लिए: http://exchanges.state.gov/education/engteaching/access.htm

फोटो: विकास नरुला